REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2025

सिख पत्रकारिता की शुरुआत

डॉ. बेअंत सिंह
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, TPD मालवा कॉलेज, रामपुरा फूल.

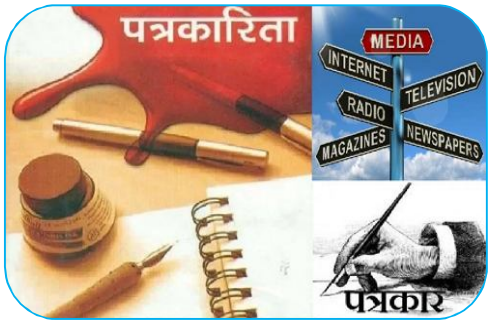

पंजाब में सही मायने में पत्रकारिता अंग्रेजों के आने के साथ शुरू हुआ, लेकिन पंजाबी जर्नलिज़्म का रॉ मटीरियल अंग्रेजों के आने से पहले ही तैयार था। जर्नलिज़्म की शुरुआत ईसाई मिशनरियों के लगाए प्रिंटिंग प्रेस से हुई। पंजाबी जर्नलिज़्म लुधियाना में 1809 AD में शुरू हुआ जब ईसाई मिशनरियों ने महाराजा रणजीत सिंह के साथ 'अमृतसर ट्रीटी' साइन करके लुधियाना में अपना मिशन बनाया। यहीं पर ईसाइयों ने एक प्रिंटिंग प्रेस खोला।पंजाबी की गुरुमुखी स्क्रिप्ट में किताबें, बुकलेट और न्यूज़लेटर छापने की आदत पड़ गई। पंजाबी में पहली किताब 1811 AD में छपी। 1911 में, ईसाई मिशनरियों ने 'बाइबिल' का पंजाबी में ट्रांसलेशन किया, जिसकी एक कॉपी श्री रामपुर की 'कैरी लाइब्रेरी' में सुरक्षित है।[1]

अंग्रेज पंजाब की भौगोलिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों से अच्छी तरह जानकार थे। इसलिए, बहुत सोच-समझकर पंजाब को चुना गया। भारत का कोई दूसरा हिस्सा इतना आकर्षक नहीं था। क्योंकि यहीं से हिंदू धर्म पूरे भारत में फैला था। महाभारत का युद्ध भी यहीं लड़ा गया था। अंग्रेजों को छोड़कर, सभी हमलावरों ने भारत पर इसी तरफ से हमला किया था। सिकंदर की अजेय सेनाओं को यहीं आकर पीछे हटाया गया था। इससे भी बड़ी बात यह है कि यह सिखों की धरती थी, जो अच्छी सोच और स्वतंत्र आचरण के मालिक थे, और सबसे बड़ी बात यह है कि इन लोगों ने पहले से ही हिंदू धर्म में मूर्ति पूजा छोड़ने, जाति-भेद मिटाने जैसे सिद्धांतों को अपना लिया था। शायद इसीलिए वे ईसाई मिशनरियों के उपदेश सुनने को तैयार थे।[2]

एक और वजह यह थी कि सेरामपुर, मार्शमैन एंड वार्ड, डॉ. एलेग्जेंडर और डॉ. डफ के ईसाई मिशनरियों की सलाह और मार्गदर्शन में, डॉ. लॉरी ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए पंजाब को अपना काम का क्षेत्र बनाना पसंद किया, क्योंकि एक तरफ, अंग्रेज महाराजा रणजीत सिंह के राज को लालची नज़रों से देख रहे थे और पादरी पंजाब के लोगों का मन बदलने, उन्हें ईसाई

[1] डॉ. मेघा सिंह, पंजाबी पत्रकारिता का इतिहास, पेज 50.

[2] E.M.Wherry, Our mission in India, pp. 4-5.

धर्म की महानता बताने और ब्रिटिश राष्ट्र की अच्छी पॉलिसी को लोगों के दिलों में इनडायरेक्टली असर करने में मददगार साबित हो सकते थे।[3] पंजाब में ईसाइयों की दिलचस्पी के और भी कई कारण थे, जैसे:

1. पंजाब के सरदार और महाराजा रणजीत सिंह अपने बच्चों को विदेशी भाषाएँ सिखाने के इच्छुक थे। इंग्लिश सिखाने के बहाने, उनके धर्म का प्रचार बहुत आसानी से किया जा सकता था।
2. यहाँ का मौसम ऐसे मिशनरियों के लिए बहुत उपयोगी था जो गर्मी सहन नहीं कर सकते थे। हिमालय के पास के इलाके का मौसम उनके लिए बहुत आरामदायक साबित हो सकता था।
3. मिशनरियों ने पहले पंजाब पर ध्यान नहीं दिया था।[4]

पंजाब में अंग्रेजों का आना जागृति का दौर माना जाता है। क्योंकि उनके आने से पंजाब की संस्थाओं में कई बदलाव आए और नई प्रवृतियां सामने आई। इन्हीं नई प्रवृतियों में से एक था जर्नलिज़्म। यह पंजाब में एक नया अनुभव था। हालांकि भारत में जर्नलिज़्म पहले ही शुरू हो चुका था, लेकिन इसकी वजह कंपनी का राज था। 1849 में पंजाब पर अंग्रेजों के कब्जे से पहले ही, उन्होंने खालसा राज की सीमाओं पर अपने प्रिंटिंग प्रेस लगाकर कई तरह की किताबें छापना शुरू कर दिया था। पंजाबी जर्नलिज़्म का पंजाब के लोगों पर धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं से असर पड़ा है।

इससे साफ़ है कि पंजाब में पत्रकारिता मुख्य रूप से धर्म फैलाने के तरीके के तौर पर शुरू हुई थी। पंजाब में पत्रकारिता मुख्य रूप से ईसाई मिशनरियों विलियम कैरी और जॉन सी. लॉरी ने शुरू की थी, जिन्होंने 1834 AD में लुधियाना में अपना धर्म फैलाने के लिए पहला प्रिंटिंग प्रेस शुरू किया था। डॉ. लॉरी नेकुछ अमेरिका के अनुभव से और कुछ सेरामपुर के मिशनरियों से प्रेरित होकर, यह राय बनाई कि अगर ईसाई धर्म फैलाने के लिए किसी नई जगह पर बेस बनाना है, तो यह प्रेस के बिना नहीं किया जा सकता।[5] जब अंग्रेज़ वार्नर ने कैरी से पंजाब में ईसाई धर्म फैलाने के अनुभव के बारे में पूछा, तो कैरी ने जवाब दिया, I still believe that the press was as important to our operations at that time as I thought it to be, but little less so now; and that carrying it on is a business most honorable and useful."[6]

पंजाब में अंग्रेज़ी पत्रकारिता की शुरुआत 1866 में 'लाहौर क्रॉनिकल' के साथ हुई, इसके एडिटर मुहम्मद अज़ीम थे।[7] यह एक राजभक्त अख़बार था। इसके बाद, 1867 में युवा सिविल सर्वेंट्स ने 'इंडियन पब्लिक ओपिनियन' निकाला।[8] लाहौर

[3]गुरचरण सिंह अर्शी, ईसाई मिशनरी: पंजाबी भाषा और साहित्य, पेज 50.

[4] गुरचरण सिंह अर्शी, ईसाई मिशनरी: पंजाबी भाषा और साहित्य, पेज 51.

[5] गुरचरण सिंह अर्शी, ईसाई मिशनरी पंजाबी भाषा और साहित्य, पेज 58.

[6] Emmett Davis, Press And Politics In British Western Punjab(1836-1937), p. 12

[7] नरिंदर सिंह कपूर, पंजाबी पत्रकारिता का विकास, पेज 33.

क्रॉनिकल एक साल तक इस पेपर का मुकाबला नहीं कर सका और इसे 'इंडियन पब्लिक ओपिनियन' में मिला दिया गया। लेकिन इससे पहले, लुधियाना प्रेस के एक मुस्लिम स्कॉलर ने फ़ारसी में 'लुधियाना अख़बार' निकालना शुरू किया। अनंत पालीकर इस बारे में कहते हैं:

The first piece printed from the ludhiana press was a Persian translation of the Sermon on the Mount which fascinated Imad-ud-din, a Muslim religious scholar and led to his conversion and subsequent career as a distinguished and prolific Christian apologist newton wrote :

"At the same time, we printed for capt. Wade, the Political Agent, who has greatly helped us in every way, a Persian newspaper called 'The Lodiana Akhbar' consisting of only four loosely printed 4to pages, prior to the setting up of our press he had copies of the 'Akhbar' written by hand"[9]

इसके बाद पंजाब में प्रेस बढ़ने लगा। लुधियाना में ईसाइयों द्वारा शुरू किया गया प्रेस अलग-अलग भाषाओं में काम करने लगा। यह प्रेस फ़ारसी, उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, सिंधी, चंबा पहाड़ी, तिब्बती और अंग्रेज़ी मटीरियल छापता था।[10] इंस्टीट्यूशनल तौर पर, पहला अख़बार 'अख़बार 'श्री दरबार साहिब' गुरमुखी स्क्रिप्ट में 1867 में अमृतसर से मुंशी हरि नारायण और फिराया लाल ने शुरू किया था। इसे लिथोग्राफी से छापा गया था। हालाँकि स्क्रिप्ट गुरमुखी थी, लेकिन भाषा हिंदी थी। इसका मकसद सिखों के बीच हिंदू धर्म का प्रचार करना था।[11] इस अख़बार के समय कूका मूवमेंट चल रहा था। जिन्होंने सिखों के बीच सिख स्पिरिट और तौर-तरीकों को पॉपुलर किया। इस आंदोलन ने लोगों में आज़ादी की चाहत पैदा की, जिसकी वजह से कूका शहीद हुए, लेकिन उस समय छपने वाले इस अखबार ने इन शहीदों का ज़िक्र करना भी ज़रूरी नहीं समझा। इस तरह, यह अखबार हिंदू धर्म का प्रचारक होने के साथ-साथ अंग्रेज़ी का भक्त भी था। इस अखबार की तरह, 'कवि चंद्रोदय' और कई दूसरे अखबार गुरुमुखी अक्षरों में छपते थे, लेकिन वे ज़्यादा दिन नहीं चल सके और जल्द ही बंद हो गए। भाई संतोख सिंह ने 1875 AD में पंजाबी और हिंदी का मिला-जुला अखबार 'सुकवीय चरधोधी' शुरू किया। डॉ. बलबीर सिंह इस अखबार के बारे में लिखते हैं, "सुकवीय चरधोधी' एक तरह का नींव का पत्थर था, जिस पर गुरुमुखी अखबारों का महल बना।"[12] यह अखबार हज़ारा सिंह की प्रेरणा से शुरू हुआ था। इसे एस. चरण सिंह ने संरक्षण दिया था। इसकी लिखावट का एक नमूना देखें:

"सभी प्यारे गुरसिखों, रासक के लोगों से यह साफ़ है कि यह सुंदर काव्यात्मक संबोधन गुरुमुखी और देवनागरी दोनों भाषाओं में एक मंथली मैगज़ीन के तौर पर छपा है।"[13] इसके बाद 1877 में लाहौर से पंडित मुकंदराम ने पूरी तरह से हिंदी

[8] ईशर सिंह अटारी, भारत में पत्रकारिता का इतिहास, पेज 142.

[9]अनंत कबका प्रियोलकर, भारत में प्रिंटिंगप्रेस, पेज 22.

[10] अनंत कबका प्रियोलकर, भारत में प्रिंटिंग प्रेस, पेज 22.

[11] सूबा सिंह, पंजाबी पत्रकारिता का इतिहास, पेज 27.

[12] डॉ. बलबीर सिंह, चरण हरि विस्तार (भाग पहला) पेज 7.

[13] लिखारी, जनवरी-मार्च, 1935, पेज 99-100.

अख़बार 'मित्रविलास' शुरू किया। इसका साइज़ छोटा था। यह एक वीकली अख़बार था और इसकी कीमत तीन रुपये सालाना थी।[14]

इसके बाद भाई गुरमुख सिंह ने 10 नवंबर 1880 को एक गुरुमुखी अख़बार शुरू किया। यह पूरी तरह से पंजाबी अख़बार था। इस अख़बार का मुख्य मकसद सिख पंथ के विरोधियों को जवाब देना और सिख धर्म का प्रचार करना था। 1881 में पंजाब का दूसरा अख़बार 'ट्रिब्यून' लाहौर से इंग्लिश में छपने लगा। इसके एडिटर एस. दयाल सिंह मजीठिया थे। यह अख़बार देव समाज आंदोलन के असर में छपा था। लेकिन अपनी धार्मिक तटस्थता की वजह से यह अख़बार जल्द ही पंजाब के लोगों की आवाज़ बन गया।

पहला उर्दू डेली अखबार 'पैसा' 1887 में छपना शुरू हुआ था। यह एक शाम का अखबार था। इसकी कीमत भी एक पैसा थी। यह देशभक्ति वाला अखबार था। कई लोग 'कोहिनूर' को पहला उर्दू अखबार मानते हैं।[15] आर्य समाज के एक बड़े नेता महाशय कृष्ण ने 30 मार्च 1919 को उर्दू अखबार 'प्रताप' छापना शुरू किया था। 18 अप्रैल 1919 को महाशय कृष्ण को गिरफ्तार कर लिया गया और अखबार बंद कर दिया गया। बेल पर बाहर आने के बाद उन्होंने फिर से अखबार छापना शुरू किया। 1919 से 1936 तक इसकी बेल पांच बार ज़ब्त हुई और महाशय कृष्ण और श्री नरेंद्र को चार महीने जेल में और इसके प्रिंटर को 30 महीने जेल में रहना पड़ा।[16]

पंजाब में छपने वाले लगभग सभी पंजाबी अखबार सिंह सभा के असर में ही छपते थे। सिंह सभा आंदोलन में नए विचारों के पारंपरिक और आधुनिक पढ़े-लिखे सिख काम कर रहे थे। यह सभा दो ग्रुप में बंटी हुई थी, सिंह सभा अमृतसर और सिंह सभा लाहौर। अक्सर दोनों ग्रुप के बीच विचारधारा के टकराव की वजह से झगड़े और टकराव होते रहते थे। उनके झगड़ों और आपसी सवाल-जवाब के बारे में कमेंट्स अक्सर दोनों के छपने वाले अखबारों में देखने को मिलते थे। इसी सिलसिले में, कई अखबार एक-दूसरे के जवाब में छपने लगे। 'खालसा अखबार लाहौर' और 'गुरमत प्रकाश अमृतसर' अखबार इसके खास उदाहरण हैं। ये दोनों अखबार इसलिए छपते थे ताकि सिख प्रोपेगैंडा के अलावा एक-दूसरे से सवाल-जवाब किए जा सकें। इसके अलावा, वे सिख समुदाय को सिख धर्म पर बाहरी हमलों को रोकने के लिए भी एजुकेट कर रहे थे। आर्य समाजियों द्वारा गुरु नानक साहिब और गुरु ग्रंथ साहिब के लिए इस्तेमाल की जाने वाली गंदी भाषा और दूसरे मुद्दों पर ज्ञानी दित सिंह जैसे समझदार सिख विद्वानों ने बहुत पक्के और ज्ञान भरे जवाब दिए। इससे सिखों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई।

1892 में भाई वीर सिंह ने 'निर्गुणयारा' अखबार शुरू किया। यह अंदरूनी फूट से ऊपर था। इसमें गुरमत साहित्य और इतिहास की खास जगह थी। अगर साहित्य के नज़रिए से देखा जाए तो इस अखबार ने बहुत अच्छी सेवा की है। भाई वीर सिंह की कोशिशों से दूसरा अखबार खालसा समाचार अमृतसर से छपने लगा। इसमें भाई वीर सिंह का लिखा लगभग सारा साहित्य छपता था।

1900 तक पंजाबी पत्रकारिता अपने शुरुआती दौर से गुज़र चुकी थी। अब उसे ऐसे नए कदम उठाने थे जिनसे सिख समुदाय को प्रचार के ज़रिए सिख धर्म की ओर उत्साहित किया जा सके। इस समय सिख समुदाय एक गंभीर संकट से गुज़र

[14] वेदप्रताप वैदिक (एडिटर), हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम, पेज 216.

[15] ईशर सिंह अटारी, भारत में पत्रकारिता का इतिहास, पेज 144.

[16] ईशर सिंह अटारी, भारत में पत्रकारिता का इतिहास, पेज 145.

रहा था। अब सिख धार्मिक संघर्ष के साथ-साथ राजनीतिक संघर्ष में भी ज़्यादा शामिल हो गए क्योंकि इस समय गुरुद्वारों से जुड़ी घटनाएँ जैसे रकाबगंज गुरुद्वारा केस, बाज बाज घाट हत्याकांड, ग़दर आंदोलन शुरुआत में जलियांवाले बाग हत्याकांड, सिखों के साथ हुई घटनाओं और सिखों के पलायन ने सिखों को सरकारी कानूनों और ज्यादतियों के खिलाफ़ डटकर खड़े होने पर मजबूर कर दिया। इसी वजह से अकाली आंदोलन शुरू हुआ। इसी वजह से पंजाब की पत्रकारिता पूरी तरह धार्मिकता से राजनीति की ओर बढ़ी। इससे पहले निरंकारी और नामधारी आंदोलनों ने सिखों में आध्यात्मिक पुनरुत्थान किया, सिंह सभा आंदोलन ने धार्मिक, सामाजिक और शैक्षिक प्रचार के ज़रिए सिख धर्म की पवित्रता को ज़ाहिर करके गुरु नानक का नाम लेने वाले लोगों को अपनी पहचान का एहसास कराया। प्यारा सिंह पदम इस दौर की पत्रकारिता के बारे में एक बहुत ज़रूरी बात कहते हैं, "इस दौर के अखबारों से ऐसा लगता है कि उस समय पंजाब में गृह युद्ध चल रहा था।"[17] 1901 में कोई नया पंजाबी अखबार शुरू नहीं हुआ। उर्दू में, एस. हजूर सिंह ने महीने का अखबार 'खालसा मैगज़ीन' शुरू किया। इसका इस्तेमाल सिख धर्म के प्रचार के लिए किया जाता था। इसी दौरान 'शहीद' अखबार शुरू हुआ। इसका प्रकाशन डॉ. चरण सिंह के संपादन में 4 दिसम्बर, 1914 को लाहौर से शुरू हुआ। डॉ. चरण सिंह भाई वीर सिंह के पिता थे। उन्होंने ही 'निर्गुणयारा' समाचार पत्र और 'खालसा समाचार' समाचार पत्र शुरू किए थे। डॉ. नरिंदर सिंह कपूर के अनुसार, 'धार्मिक बहसों का जवाब देने में सरदार चरण सिंह ज्ञानी दित सिंह के बाद दूसरे स्थान पर थे। इसके अलावा सच्चा धंदौरा (1909), हिंदुस्तान गदर (1913), पंथ सेवक (1914), पंजाब दर्पण (1915), पंथ (1906), गुरमत प्रचार पत्रिका (1918), गुरमत प्रकाशक (1918) आदि अन्य महत्वपूर्ण सिख समाचार पत्र भी थे।

1920 से 1935 तक की पत्रकारिता को संक्रमण काल की पत्रकारिता भी कहा जाता है। क्योंकि सिंह सभा आंदोलन के बाद पंजाब में अकाली आंदोलन और कुछ अन्य आंदोलन उठ रहे थे। समाजवाद की विचारधारा के तहत कई अखबार शुरू किए गए। इनमें 'कीर्ति' और 'प्रीतलरी' अखबारों का नाम मुख्य रूप से लिया जा सकता है। इस समय के अखबारों के छपने से पहले हुई घटनाओं का बहुत असर हुआ।

इससे पहले की घटनाएँ थीं, कांग्रेस की स्थापना, गुरुद्वारा रकाब गंज मोर्चा, बजब घाट हत्याकांड, गुरु नानक जहाज़ क़ोम गाता मारू हत्याकांड, साथ ही सिख पत्रकारिता, धार्मिक प्रचार, महिलाओं की शिक्षा और सरकार का विरोध। इससे लोगों के मन में देशभक्ति की भावना जागी। 1920 में अकाली आंदोलन शुरू हुआ और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बनी। इस तरह, बड़े गुरुद्वारों का मैनेजमेंट सिखों के हाथ में आ गया और कई तकलीफ़ों के बावजूद वे अपने अधिकार पाने में कामयाब रहे। महात्मा गांधी ने इस समय हुए गुरु के बाग़ मोर्चे को भारत की आज़ादी की पहली कामयाबी कहा था। इस दौरान छपने वाले सभी अख़बार किसी न किसी तरह अकाली आंदोलन से जुड़े थे। खासकर अकाली अख़बार जो इसी आंदोलन की देन था। यह अख़बार 21 मई 1920 को गुरु अर्जन साहिब के शहीदी दिन शुरू हुआ था। मशहूर अकाली नेता मास्टर सुंदर सिंह लायलपुरी इसके मैनेजर थे। ईशर सिंह अटारी के अनुसार, "रोज़ाना अकाली अख़बार की जोशीली लिखाई ने अकाली आंदोलन को जन्म दिया। इस आंदोलन के लिए लोगों में इतना जोश बढ़ गया था कि सरकार की सख्ती का भी इस पर कोई बुरा असर नहीं पड़ सका। ..... इस नाकामी की वजह से, सरकार ने पहले 2-3 सालों में ही 'अकाली' अख़बार के ख़िलाफ़ सबसे ज़्यादा केस चलाए और उसके करीब दो दर्जन एडिटर को जेल में डाल दिया।" बाद में, मास्टर तारा सिंह ने 'प्रदेशी

[17] प्यारा सिंह पदम, संक्षिप्त सिख इतिहास, पेज .....

खालसा' के साथ मिलकर 'अकाली ते प्रदेशी' अख़बार शुरू किया। अकाली प्रदेशी अख़बार में ऐसे नोट्स छपते थे "जिसे किसी एक व्यक्ति ने अपनी राजनीतिक, साहित्यिक या नैतिक भूख मिटाने के लिए शुरू नहीं किया था, बल्कि यह सिख समुदाय का एक प्रतिनिधि अख़बार था जिसे पूरा सिख समुदाय चला रहा था। सिख राजनीति का इतिहास (देश की आज़ादी तक) इसी अख़बार से निकाला जा सकता है।" इस तरह, 'अकाली अख़बार' का सिखों और भारत के इतिहास में बहुत बड़ा योगदान है। इसके बाद, सरदार अर्जन सिंह गर्गज के एडिटरशिप में तरनतारन से बीर खालसा (1921) छपने लगा। वे अकाली आंदोलन के पूरे सपोर्टर थे। 'खालसा' अखबार 7 फरवरी 1922 को अमृतसर से छपने लगा। भाई जोध सिंह M.A. इसके एडिटर थे। बाद में इसे 'खालसा एडवोकेट' (अंग्रेजी) समाचार पत्र के साथ मिला दिया गया। जत्थेदार (1922) एस.एस. चरण सिंह के संपादन में प्रकाशित हुआ। यह समाचार पत्र उदारवादी विचारों का था, अतः सिख नीति को यह पसंद नहीं आया, जिसके कारण इसे शीघ्र ही बंद कर दिया गया। नामधारी पंथ के प्रचार-प्रसार के लिए कूका (17 अगस्त 1922) समाचार पत्र अस्तित्व में आया। इसने अकाली आंदोलन के विरुद्ध काम किया। इस प्रकार सिखों द्वारा पत्रकारिता के लिए अन्य प्रयास भी किए गए, जैसे-गरगज अकाली (1910), बब्बर शेर (1923), कौमी दर्द (1923), असली कौमी दर्द (1927), दुश्मन दमन (1928), गुरुद्वारा गजट (1929) आदि प्रमुख समाचार पत्र प्रकाशित हुए। इसके अलावा पांच दिवसीय, सात दिवसीय तथा मासिक समाचार पत्र भी प्रकाशित होते थे। उदाहरण के लिए, कृपाण बहादुर, खालसा सुअनी, पांच खालसा समाचार, गुरु नानक दर्शन, मौजी अखबार, निर्मल समाचार आदि थे।

उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि यद्यपि पत्रकारिता की शुरुआत सिखों द्वारा नहीं की गई थी, फिर भी जिस तरह से सिखों ने पंजाब में अपने मुद्दों को उठाने के लिए इसका इस्तेमाल किया, वह बहुत सराहनीय था। अगर पंजाब में पत्रकारिता शुरू न हुई होती, तो शायद पंजाब में घटी घटनाओं की जानकारी देश-दुनिया को न मिल पाती। पंजाब में घटी घटनाओं पर पूरी दुनिया का ध्यान गया और इसने पंजाब को एक एक नई पहचान बनाई गई, जिससे सिख पत्रकारिता को और बढ़ावा मिला और इस ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।